

पाठ्यपुस्तक में समाहित मूल्य - अनुशासन

जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व होता है। इसके बिना सफल जीवन जीने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जो भी व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासन को महत्व नहीं देता वह कभी भी सफल नहीं हो सकता। अगर हमें जीवन में सफल होना है तो हमें समय पर उठना, समय पर सोना, बिना समय को खराब किए काम करने की आदत को विकसित करना होगा। गुरु आप को शिक्षा दे सकता है, सही मार्ग पर चलना बता सकता है। लेकिन उस शिक्षा को आप किस प्रकार अपने जीवन में उतारते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। यदि हम अपने जीवन में अनुशासन का पालन नहीं करते हैं, तो हमेशा ही दुख और असफलता का मुंह देखना पड़ता है। अनुशासन का मतलब है - "अपने हर कार्य को समय पर और व्यवस्थित ढंग से करना।" अनुशासन किसी भी व्यक्ति या संस्था के सफल भविष्य का निर्माण कर सकता है। हम अनुशासन की प्रेरणा प्रकृति से ले सकते हैं। जैसे - सूरज हर रोज सुबह अपने समय पर निकलता और शाम को समय से ढल जाता है, पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने से ही दिन रात होते हैं। अनुशासन का मतलब सिर्फ समय पालन ही नहीं है या समय के साथ चलना ही नहीं है इसमें व्यक्ति का दूसरे लोगों के साथ शिष्ट व्यवहार करना, दूसरों को सम्मान व आदर देना इत्यादि सभी सम्मिलित हैं।

छोटे बच्चे एक खाली किताब की तरह होते हैं, जिसमें उस समय जो भी लिख दिया जाता है बस जिंदगी भर उनके साथ रहता है इसीलिए हम लोगों को बचपन से ही बड़ों का आदर करना और समय का पाबंद होना सिखाया जाता है।

अनुशासन की परिभाषा

राय बर्न के अनुसार-"एक विद्यालय में अनुशासन का अर्थ सामान्य व्यवस्था तथा कार्यों के संपादन में विधि, नियमितता तथा आदेशों का अनुपालन होता है।"

सर पर्सीनन के अनुसार-"अनुशासन एक नियम के प्रति किसी की भावनाओं तथा शक्ति के आत्मसमर्पण में निहित होता है यह व्यवस्था पर आरोपित किया जाता है तथा कौशल एवं निरर्थकता के स्थान पर कौशल एवं मितव्ययता उत्पन्न करता है ,हो सकता है हमारे स्वभाव का अंश इस नियंत्रण को प्रति नियंत्रित करें ,किंतु इसकी मान्यता अंततः ऐच्छिक स्वीकृति पर होती है।"

सत्र में चर्चा के प्रमुख बिंदु-

*अनुशासन का अर्थ व परिभाषा

*अनुशासन के प्रकार

*जीवन में अनुशासन का महत्व

*दैनिक जीवन में अनुशासन

*अनुशासित रहने के तरीके

*प्रकृति में अनुशासन के उदाहरण

*विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता

*अनुशासन के लाभ

--बच्चों में अनुशासन मूल्य के विकास हेतु पाठ्य पुस्तकों पर चर्चा

*कक्षा -दो -कलरव -पाठ -जगतपुर के बच्चे

कक्षा -4 -कलरव -पाठ- जब मैं पढ़ता था

*कक्षा-3,7-संस्कृत पीयूषम् -पाठ-सुभाषितानि

*कक्षा- 6 -मंजरी -पाठ-अस्माकं दिनचर्या

*कक्षा- 5 -कलरव- पाठ-मेरी शिक्षा व लाल बहादुर शास्त्री

कक्षा -4 -संस्कृत पीयूषम् पाठ -सदाचारः

रत्नेश कुमारी पाण्डेय
वाराणसी